Content

-: विषय - सूची :-

"सातवें-आठवें दशक के हिन्दी नाटकों में 'वैयक्तिक-चेतना' और पारिवारिक सम्बन्ध"

विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय :

(क) चेतना का धात्वर्थ, कोषगत अर्थ, विद्वानों के मत -
(ख) "वैयक्तिक चेतना"- का आशय-स्वरूप, साहित्य में प्रतिफलन -
(ग) भारतीय दृष्टिकोण - निष्कर्ष -
(घ) पाश्चात्य दृष्टिकोण - निष्कर्ष -
(च) वैयक्तिक चेतना के विविध पक्ष - वर्गीकरण -
(छ) वैयक्तिक चेतना- का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव-मूल्यांकन

द्वितीय अध्याय:

पारिवारिक जीवन में वैयक्तिक चेतना का विश्लेषण

(1) अ- पृष्ठभूमि
ब- पूर्वयुगीन चेतना- स्वातंत्र्योत्तर काल में वैयक्तिक चेतना (सन् 1947 से 1960)
स- युगीन चेतना- साठोत्तर काल में वैयक्तिक चेतना (सन् 1960 से 1980)

§2§ वैयक्तिक चेतना को प्रभावित करनेवाली प्रवृत्तियाँ -

§क§ पाश्चात्य प्रभाव §ख§ बौद्धिकता §ग§ वैज्ञानिकता
§घ§ राजनैतिक §ड॰§ आर्थिक §च§ यातायात

§3§ वैयक्तिक चेतना से प्रभावित पक्ष :

§क§ वैयक्तिक पक्ष
§ख§ यौन चेतना- टूटती नैतिकता
§ग§ मानवीय मन:स्थिति - मूल्य संक्रमण -

§4§ पारिवारिक पक्ष -

§क§ नारी स्वतंत्रता एवं स्व अस्तित्व की भावना -
§ख§ पारिवारिक संबंधों की स्थिति -
§ग§ §1§ पति-पत्नी §2§ माता-पिता और सन्तान
§3§ परस्पर भाई-बहन तथा अन्य कौटुम्बिक संबंध -
§घ§ स्वच्छंद यौन चेतना- टूटते बनते परिवार
§च§ विवाह व अन्य संस्कारों के प्रति नये दृष्टिकोण -
§छ§ जातीय व्यवस्था के नये प्रतिमान -

§5§ राजनैतिक व आर्थिक पक्ष :

- वैयक्तिक चेतना से प्रभावित राजनैतिक गतिविधियाँ
- औद्योगीकरण
- आर्थिक स्थिति - वर्ग संघर्ष
- अर्थ - नारी आत्मनिर्भरता

मूल्यांकन

तृतीय अध्याय : कृति परिचय -
****

"वैयक्तिक चेतना" के परिपेक्ष्य में आलोच्यकालीन नाटकों का विश्लेषण -

चतुर्थ अध्याय :
****

नाट्य शिल्प और वैयक्तिक चेतना -

§1§ आमुख -

§2§ रंगमंच - §क§ रंग शिल्प §ख§ रंगीय उपकरण §ग§ रंगसंकेत
§घ§ रंग दीपन §ड॰§ रंगमंचीय प्रतीक- विधान ।

§3§ अभिनय - वर्जित दृश्यों का अभिनय -
- अभिनय के नये प्रतिमान -

§4§ नाट्य रूढ़ियों के प्रति चेतना -
§क§ कथानक §ख§ मंगलाचरण §ग§ भरतवाक्यम् §घ§ अवस्थाएं-आदि

§5§ लेखन -
- भाषा शैली
- संवाद
- निष्कर्ष

पंचम् अध्याय :
****

वैयक्तिक चेतना §नाटकों के परिपेक्ष्य में§

§1§ बौद्धिकता एवं उसका प्रभाव

§2§ स्व अस्तित्व की भावना

§3§ नारी स्वतंत्रता - नये आयाम

§4§ स्वच्छंद यौन चेतना

§5§ नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में बिखराव

§6§ परम्पराओं के प्रति नये स्वर

§7§ मानवीय जीवन में विद्रूपताओं की नई दिशाएं

- मूल्यांकन -

षष्ठ अध्याय
****

नाटकों के संदर्भ में - §वैयक्तिक चेतना और पारिवारिक जीवन§

§क§ - टूटते संयुक्त परिवार

- वैयक्तिक चेतना से प्रभावित §लघु§ परिवार
- विवाह व अन्य संस्कारों के प्रति नये चिन्तन
- जातीय व्यवस्था - पुनर्मूल्यांकन
- टूटते सामाजिक रीति-रिवाज
- निष्कर्ष

सप्तम अध्याय
****

§आलोच्यकालीन नाटक तथा§ राजनैतिक एवं आर्थिक प्रणाली और वैयक्तिक चेतना

- आमुख
- समकालीन राजनीति और वैयक्तिक चेतना
- चुनाव प्रणाली एवं दलगत नीति
- आर्थिक विषमता
- औद्योगिकरण तथा वर्ग चेतना
- निर्धनता, मंहगाई व बेरोज़गारी से बिखरती चेतना -
- `निष्कर्ष`

-उपसंहार-

-*****-